International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253x, (Print), E-ISSN 2320-544x, Issue-3, Vol-I, March-2013

शोध पत्र- हिन्दी

# रघुवीर सहाय की कविताओं में बिंबात्मकता

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्यता हिन्दी, शा. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी, म.प्र.

रघुवीर सहाय नई कविता के क्षेत्र में जटिल रचना प्रकिया के कवि माने जाते हैं। उनकी कविताओं में अपने समकालीन कवियों से अधिक जटिल भावबोध नजर आते हैं किंतु उनकी रचना प्रकिया एवं कविता के अंदर निहित व्यंग्य उनकी कविता को अत्यंत सशक्त बनाते हैं । वस्तव में उनकी कविता बहुत कम कहकर बहुत कुछ कह जाती है। उनकी निष्ठा मानवता के प्रति अधिक है ऐसे में वे अमानवीय विसंगतियों की व्याख्या न करके उन्हें जीवंत दिखाकर उसका अनुभव करने के लिये विवश करते हैं। छद्म लोकतंत्र में आम आदमी की बेबसी ,आदमी की पीड़ा का व्यापार और परिस्थितियों में बंधा लाचार आदमी उनकी कविताओं में याचना सी करते नजर आते हैं किंतु यह भी जीवन का एक सत्य है, जिसे उन्होंने व्यक्त करने में झिझक नहीं दिखाई है। उनकी प्रारंभिक साहित्य साधना प्रकृति और प्रेम से प्रकट हुई। प्रकृति के दृश्यों में उन्होंने जीवन की पीड़ा को भी झिलमिलाते हुऐ देखा इसी के प्रभाव से उनकी रचनाओं में बिंब प्रस्तुत करने की कला का विरूतार हो गया। संभवतः इसी कारण उनकी रचनात्मकता जटिल हो गई है। किंतु कविता में प्रस्तुत बिंब पाठक की संवेदना को शीघ्र कचोटने का सामर्थ्य रखते हैं। अपाहिज की पीड़ा का प्रदर्शन करने वालों की मनोदशा का बिंब निम्न पंक्तियों से देखा जा सकता है–

1''हम दूरदर्शन पर बोलेंगे,हम समर्थ शक्तिवान,हम एक दुर्बल को लायेंगे,एक बंद कमरे में उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं! तो आप क्यों अपाहिज हैं? आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा! देता है? (कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा) हां तो बताईये ,आपका दुख क्या है ,जल्दी बताईये वह दुख बताईये (बता नहीं पाऐगा) सोचिये बताईये ,आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है ,कैसा ,यानि ,कैसा लगता है? (हम खुद इशारे से बतायेंगे कि क्या ऐसा?) सोचिये, बताईये, थोड़ी कोशिश करिये (यह अवसर खो देंगे?)

आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते हम पूछ पूछ उसको रूला देंगे इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का, करते हैं? फिर हम परदे पर दिखलायेंगे फूली हुई आंख की एक बड़ी तस्वीर, बहुत बड़ी तसवीर और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी (आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे) एक और कोशिश दर्शक ,धीरज रखिये हमें दोनों एक संग रूलाने हैं, आप और वह दोनों (कैमरा , बस करो नहीं हुआ रहने दो परदे पर वक्त की कीमत है) अब मुसकुरायेंगे हम आप देख रहें थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम (बस थोड़ी ही कसर रह गई) धन्यवाद!''1 इस प्रकार के दृश्य के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं दरअसल यह हमें कुछ कहने लायक ही नहीं छोड़ता है। यह अमानवीय व्यवहार हम कई बार देख चुके हैं।

एक सामान्य परिवार की घरेलू महिला का जीवचन कोई बिशेष अलग नहीं होता है। लगभग वही नजारा सभी आम घरेलू महिलाओं को अपने घर रूपी जीवन में भोगना पड़ता है। घर की सभी लापरवाह जिम्मेदारियां ,उनके लिये जरूरी समझे जाने वाले सभी साधन उनके लिये घर में ही उपलब्ध हैं उन्हें फिर और किस चीज की आवश्यकता है। इस कविता से उस बंद घर की स्थिति देखी जा सकती है–

2''घर से तो खैर निकलने का सवाल ही नहीं उठता औरतों को जो चाहिये घर ही में है,एक महाभारत है,एक रामायण है,तुलसीदास की भी,राधेश्याम की भी ,एक नागिन की स्टोरी मय गाने,

और एक खारी बावली में छपा कोकशास्त्र , एक खूंसठ महरिन है प्रपंच के लिये एक अधेड़ खसम है जिसके प्राण अकच्छ किये जा सकें एक गुचकुलिया सा आंगन कई कमरे कुठरिया एक के अंदर एक बिस्तरों पर चीकट तकिये, कुरसियों पर गौंजे हुऐ उतारे कपड़े फर्श पर ढनगते गिलास खूंटियों पर कुचैली चादरें जो कुऐं पर ले जाकर फींची जायेंगी,

घर में सबकुछ है जो औरतों को चाहिये सीलन भी और अंदर की कोठरी में पांच सेर सोना भी''[2] औरत उतनी ही इंसान है जितना आदमी, खुली हवा में सांस लेना उसका भी इंसानी अधिकार है किंतु उसका जीवन सिर्फ घर क्यों रह गया है यह दर्द हम इस कविता में आसानी से समझ सकते हैं।

जिंदगी किस तरह एक पुनरावृत्ति यंत्र बन गई है जहां जो भी हो रहा है वह सिर्फ लीक पीटने जैसा है, ऐसी दुनिया में कुछ भी नया नजर न आकर एक बासी दुनिया यदि कवि को नजर आती है तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं है। वास्तव में अब इस दुनिया में कुछ भी नया और मासूम नहीं है इसीलिये तो कवि की नजरों में दुनिया–

3''हिलती हुई मुंडेरे हैं और चटखे हुऐ हैं पुल , बररे हुऐ दरवाजे हैं और धंसते हुऐ चबूतरे दुनिया एक चुरतुराई सी चीज हो गई है, दुनिया एक पपड़ियाई सी चीज हो गई है, लोग आज भी खुश होते हैं पर उस वक्त एक बार तरस जरूर खाते हैं

लोग ज्यादातर वक्त संगीत सुना करते हैं, पर साथ साथ और कुछ जरूर करते रहते हैं मर्द मुसाहबत किया करते हैं, बच्चे स्कूल का काम,दुनिया की सब औरतें बुना करती हैं मिलकर एक दूसरे के नमूनोंवाला एक अनंत स्वेटर दुनिया एक चिपचिपाई हुई सी चीज हो गई है, लोग या तो कृपा करते हैं या खुशामद करते हैं, लोग या तो ईर्ष्या करते हैं या चुगली खाते हैं

लोग या तो शिष्टाचार करते हैं या खिसियाते हैं ,लोग या तो पश्चाताप करते हैं या घिघियाते हैं, न कोई तारीफ करता है न कोई बुराई करता है, न कोई हंसता है न कोई रोता है न कोई प्यार करता है न कोई नफरत लोग या तो दया करते हैं या घमंड दुनिया एक फफूंदियाई हुई सी चीज हो गई है,''3

सत्ता पाने की राजनीति ने किस तरह जन को गुलामा बनाया है उसे एक वक्त की रोटी का आश्वासन देकर एक वक्त की ही रोटी खाने पर मजबूर किया है और किस तरह भूखे को चिर भूखा रखकर भूख मिटाने की योजनाओं के नाम पर उसकी बची खुची रोटी भी छीन ली है यह इस कविता में स्पष्ट है–

4''मनुष्य के कल्याण के लिये पहले उसे भूखा रखो कि वह और कुछ सोच न पाये फिर उसे कहो कि तुम्हारी पहली जरूरत रोटी है जिसके लिये वह गुलाम होना भी मंजूर करेगा फिर तो उसे यह बताना रह जायेगा कि अपनों की गुलामी विदेशियों की गुलामी से बेहतर हैऔर विदेशियों की गुलामी वे अपने करते हों जिनकी गुलामी तुम करते हो वह भी क्या बुरी है तुम्हें रोटी तो मिल रही है एक जून''[4]

चारों और अपनों और अपने जैसे लोगों के बीच भी जिंदगी कहीं न कहीं एकाकी है किंतु यह एकाकीपन अपने द्वारा बनाया नहीं बल्कि अपने अपने मानकों पर सभी कहीं न कहीं साथ छोड़ ही देते हैं ऐसे में स्वयं को अकेला ही समझना पड़ता है–

5''मेरा एक जीवन है उसमें मेरे प्रिय हैं मेरे हितैषी हैं मेरे गुरूजन हैं उसमें मेरा कोई अनन्यतम भी है पर मेरा एक और जीवन है जिसमें मैं अकेला हूं जिस नगर के गलियारों फुटपाथ मैदानों में घूमा हूं हंसा खेला हूं उसके अनेक हैं नागर सेठ म्युनिस्पिल कमिश्नर नेता और सैलानी शतरंजबाज और आवारे पर मैं इस हाहाहूती नगरी में अकेला हूं''[5]

मरती हुई संवेदना और मिटते नैतिक मूल्य को पूरी तरह निरावृत करती रामदास की हत्या आंखों के सामने हमारे वर्तमान को ला खड़ा करती ह जिनमें मानव कितना असहाय है–

6''चौड़ी सड़क गली पतली थी दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था अंत समय आ गया पास था,
उसे बता दिया गया था उसकी हत्या होगी निकल गली से
तब हत्यारा,आया उसने नाम पुकारा, हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी,
भीड़ ठेलकर,लौट गया वह,मरा पड़ा है,रामदास यह, देखो,देखो बार,बार कह,लोग निडर,उस जगह खड़े रह लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी''[6]

प्रकृति के वर्णन में भी रघुवीर सहाय जी उसे थोड़ा जटिल बनाकर उसे किसी विशेष भाव से जोड़ देते हैं किंतु उसके वावजूद उसके सौंदर्य का मूल आभास बना रहता है। बसंत के आगमन पर भी कवि को मौसम के बजाय अन्य लक्षणों से परिवर्तन का अहसास होता है– 7''जैसे बहन दा कहती है ऐसे किसी बंगले के किसी तरू (अशोक) पर कोई चिड़िया कूकी चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराये पांव तले उंचे तरूवर से गिरे पड़े पड़े पियराये पत्ते कोई छः बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहायी हो खिली हुई हवा आयी फिरकी सी आयी चली गई

ऐसे फुटपाथ पर चलते चलते कल मैंने जाना कि बसंत आया और यह कैलेण्डर से मालूम था अमुक दिन वार मदन महीने की होवेगी पंचमी दफतर में छुट्टी थी यह था प्रमाण

और कविता में पढ़ते रहने से यह पता था कि दहर दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल आम बौर आवेंगे रंग रस और गंध से लदे फंदे दूर के विदेश के वे नंदनवन होंगे यशस्वी मधु मस्तादिक भौंर आदि अपना अपना कृतित्व अभ्यास करके दिखावेंगे

यही नहीं जाना था कि आज के नगण्य दिन जानेगा जैसे मैंने जाना कि बसंत आया।''[7]

8''बसंत वही आदर्श मौसम और मन में कुछ टूटता सा, अनुभव से जो जानता हूं कि यह बसंत है''[8]

शीतल चांदनी में चांद को देखकर कवि चंद्रमा के सौंर्य के बजाय उसकी आदतों के बसरे में विचारमग्न है इसलिये कि उसके लिये चांद भी जिंदगी की शिक्षा देने वाला साधन है–

9''चांद की कुछ आदतें हैं एक तो वह पूर्णिमा के दिन बड़ा सा निकल आता है बड़ा नकली (असल शायद वही हो),दूसरी यह नीम की सूखी टहनियों से लटककर टंगा रहता है (अजीब चमगादड़ी आदत है) तथा यह तीसरी बहुत उम्दा है कि यह मस्जिद की सीमायें और गुंबद की पिछाड़ी से जरा मुड़िया उठाकर मुंह बिराता है हमें यह चांद इसकी आदत कब ठीक होंगी''[9]

प्रकृति के कोमल नन्हे पत्तों वाला पौधा जितनी शांति दे सकता है उतनी युद्धबंदियों की पंक्तियां विजयी सैनिकों को नहीं दे सकती। यही प्रश्न कवि सैनिकों से पूछता है–

10''गमले में उगा नन्हीं नन्हीं पत्तियों का हरा सजग विरूवा
मुझे शांति देता है तुम्हें क्या देती है तुम्हारी सेनापतियों सैनिक

युद्ध बंदियों की पांति तुम जिस जीवनमें जुते हो,अनुयायियों ,उन्हीं से मैं भी अर्पित हूं अपने कवि धर्म से अपनी ही भांति।''[10]

विजय का प्रतीक पुष्पमाला सिर्फ परिणाम का ही प्रतीक नहीं है बल्कि जीवन में बीते कई अनुभव कई संघर्ष जिस सूत्र में बंधे रहते हैं उनका सामना करना ही वास्तविक युद्ध है भले ही संसार की दृष्टि में व्यक्ति विजयी हो या न हो अर्थात् अपने आप में ही कई संघर्षों के सामा करने का प्रतीक है इसीलिये प्रकृति पुष्पों के उपहार सभी को प्रदान करती है–

11''प्रतिदिन,एक बिछोह हुआ,प्रतिदिन मैंने मोह किया,वन,उपवनमें जो कुछ पाया,जयमाला में पोह लिया अनगढ़ है पर सुंदर है यह मेरे मन का संचय है फूल विवश मुरझा जाये पर धागा वही मृत्युंजय है गुंथी रहेगी माला चाहे,जग सौरभ से भर न सके,जीवनकी जयहो चाहे,जन यह,रण जय कर न सके''[11]

सूर्योदय की बेला में जीवन की गति देखते ही बनती है। यदि कोई कव इस समय जाग रहा हो और उन सभी प्राकृतिक परिवर्तनों का क्रमशः अध्ययन करे तो उसके सामने इसी प्रकार का दृश्य उभरेगा–

12''आया प्रभात ,चंदा जग से कर चुका बात ,गिन गिन जिनको थी कटी किसी की दीर्घ रात अनगिन किरणों की भीड़भाड़ से भूल गये पथ और खो गये वे तारे अब स्वप्नालोक के वे अविकल शीतल अशोक पल जो अब तक थे फैल फैल कर रहे रोक गतिवान समय की तेज चाल ,अपने जीवन की क्षण भंगुरता से हारे जागे जन जन ज्योतिर्मय हो दिन का क्षण क्षण ओ स्वप्न प्रिये उन्मीलित कर दे आलिंगन इस गरम सुबह तपती दुपहर में निकल पड़े श्रमजीवी धरती के प्यारे''[12] इन सभी कविताओं में एक दृश्य उपस्थित करने की क्षमता है। यही रघुवीर सहाय जी की शैली है जिसमें भाव या प्रसंग कोई सा भी क्यों न हो उसमें एक छायांकन करने का प्रयास उन्होंने किया है। साथ ही कई बार दृश्यों का आगमन बहुत जल्दी होता है। ऐसा लगता है कवि जल्दी जल्दी अपनी बात कहकर अपने पर हो रही पीड़ा को उतारना चाहता है। इसी प्रयास में उनमें कहीं जटिलता भले ही आ जाये किंतु अपने कथ्य को पूरे प्रभाव के साथ उन्होंने व्यक्त किया है। कुल मिलाकर यथार्थ रि-को उसकी पूरी वास्तविकता और संवेदना के साथ एक छवि के रूप में प्रस्तुत करने में रघुवीर सहाय का विशेष स्थान है।

## संदर्भ ग्रंथ


1. कैमरे में बंद अपाहिज–कविता–लोग भूल गये हैं काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. न.दि.
2. हमारी हिंदी–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
3. दुनिया–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
4. गुलामी–कविता–रघुवीर सहाय।
5. अकेला–कविता–रघुवीर सहाय।
6. रामदास–कविता–रघुवीर सहाय।
7. बसंत आया–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
8. बसंत–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
9. चांद की आदतें–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई.दिल्ली।
10. अर्पित–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
11. माला–कविता–सीढ़ियों पर धूप में काव्य संग्रह रघुवीर सहाय राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
12. प्रभाती–कविता–रघुवीर सहाय।